

---

# Shri Sharadastotram 2

श्रीशारदास्तोत्रम् २

## Document Information

---

Text title : shAradAstotram 2

File name : shAradAstotram2.itx

Category : devii, sarasvatI, jaina, devI

Location : doc\_devii

Transliterated by : DPD

Proofread by : DPD

Description/comments : from Gujarati book mahAlakShmIshAradApUjana

Latest update : August 28, 2021

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 28, 2021

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Shri Sharadastotram 2

---

### श्रीशारदास्तोत्रम् २

---



वाग्देवते ! भक्तिमतां स्वशक्तिकलापवित्रा सितविग्रहा मे ।  
बोधं विशुद्धं भवती विघन्तां कलापवित्रा सितविग्रहा मे ॥ १ ॥

अङ्गुप्रवीणा कललंसपत्रा कृतस्मरेणानमतां निहन्तुम् ।  
अङ्गुप्रविणा कललंसपत्रा सरस्वती शश्वदपोहतां वः ॥ २ ॥

ब्राह्मि विजेषाष्ठ विनिन्द्रकुन्दप्रभावदाता धनगर्जितस्य !  
स्वरोण जैत्री ऋतुना स्वकीय प्रभावदाता धनगर्जितस्य ॥ ३ ॥

मुक्ताक्षमालालसदौषधीशाडभिशूज्जवला भाति करे त्वदीये ।  
मुक्ताक्षमालालसदौषधीशा यां प्रेक्ष्य भेजे मुनयोऽपि लर्षम् ॥ ४ ॥

ज्ञानं प्रदातुं प्रवणा ममातिशयालुनानाभवपातकानि ।  
त्वं नेमुषां भारति ! पुण्डरीकशयालु नानाभवपातकानि ॥ ५ ॥

प्रौढप्रभावासमपुस्तकेनः धाताऽसि येनाम्भ ! विराजिहस्ता ।  
प्रौढप्रभावासमपुस्तकेन विद्यासुधापूरमदूरदुःखा ॥ ६ ॥

तुभ्यं प्रणामः कियते न येन मरालयेन प्रमदेन मातः ।  
कीर्तिं प्रतापौ भुवि तस्य नम्रमरालयेन प्रमदेन मातः ॥ ७ ॥

उर्य्यारविन्दभ्रमदं करोति, वेवं यदीयोऽर्थति तेऽङ्घ्रियुग्मम् ।  
उर्य्यारविन्दभ्रमदं करोति स स्वस्थ गोष्ठीं विदूषां प्रविश्य ॥ ८ ॥

पादप्रसादात् वद्रव रुप-सम्पत्वेष्वाभिरामोदितमानवेशः ।  
भवेन्नरः सूक्तिभिरम्भ ! चित्रोल्लेष्वाभिरामोदितमानवेशः ॥ ९ ॥

सितांशुकान्ते नयनाभिरामामूर्तिं समाराध्य भवेन्ननुष्यः ।  
सितांशुकान्ते नयनाभिरामान्धकारसूर्यः क्षितिपावतंसः ॥ १० ॥

येन स्थितं त्वामनु सर्वतीर्थैः सभाजिता मानतमस्तकेन ।  
दुर्वादिनां निर्दलितं नरेन्द्रसभाजिता मानतमस्तकेन ॥ ११ ॥

सर्वज्ञवक्त्रवरमारसाङ्गुलीना

मालिं धृती प्राणयमन्थरया दशैव ।

सर्वज्ञवक्त्रवरतामरसाङ्गुलीना

प्रीणात् विश्रुतयशाः श्रुतदेवता नः ॥ १२ ॥

कूमस्तुतिर्निभिऽभक्तिजडत्वपृक्तै-

र्गुम्भैर्गिरामिति गिराभधिदेवता सा ।


भालऽनुकम्भ्य षति रोपयतु प्रसाद-

स्मेरा दृशं मयि जिनप्रभसूरिवर्ष्या ॥ १३ ॥


॥ षति श्रीशारदास्तोत्रं (२) सम्पूर्णम् ॥

Encoded and proofread by DPD

---

——  
*Shri Sharadastotram 2*

pdf was typeset on August 28, 2021

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

